P.G.
SEM-II
Paper - 9

कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

'गोदान'

प्रश्न - निम्नलिखित ~~व्याख्या~~ गद्यांश की व्याख्या करें

" कृषक के जीवन का तो यह प्रसाद है। भोला के साथ वह छल कर रहा था और वह व्यापार उसकी मर्यादा के अनुकूल था। अब भी लेन देन में उसके लिए लिखा पढ़ी होने और न होने में कोई अन्तर न था। सूखे बूढ़े की विपदाएँ उसके मन को भीरु बनाए रहती थीं। ईश्वर का रौद्र रूप सदैव उसके सामने रहता था। पर यह छल उसकी नीति में छल न था। यह केवल स्वार्थ सिद्धि थी और यह कोई बुरी बात न थी। इस तरह का छल तो वह दिन रात करता रहता था। घर में दो चार रूपये पड़े रहने पर भी महाजन के सामने कसमें खा जाता था कि एक पाई भी नहीं है। सन को कुछ गीला कर देना और रुई को कुछ बिनौला भर देना उसकी नीति में जायज था। और यहाँ तो केवल स्वार्थ न था, थोड़ा मनोरंजन भी था। बुड्ढों का बुढ़भस हास्यास्पद वस्तु है और ऐसे बुड्ढों से अगर कुछ ऐंठ भी लिया जाय तो कोई दोष पाप नहीं।"

उत्तर

प्रस्तुत पंक्तियाँ मुंशी प्रेमचन्द लिखित गोदान उपन्यास से ली गयी है। यहाँ कृषक जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

भोला की गाय को देखकर होरी के मन में लालच और स्वार्थ एक साथ प्रवेश कर जाता है। भोला और होरी के बीच गाय के सम्बन्ध में बातें हो रही थी। इसी संदर्भ में लेखक का कथन है कि किसान के जीवन

का तो यह प्रसाद है। इस तरह का छल छद्म का व्यापार तो किसानों की मर्यादा के अनुकूल होता है, लेन-देन में लिखा पढ़ी का होना या न होना उनके लिए कोई खास अर्थ नहीं रखता है क्योंकि वे जानते हैं कि लिखा पढ़ी हो या न हो महाजनों के चंगुल से बाहर आना उनके वश में नहीं है। उसके ऊपर से सूखे और बाद की विपत्ति उसके मन को और भी भयभीत बनाए रखती है। होरी जिस तरह का छल भोला के साथ कर रहा था वह उसके नजरिए से छल न रहकर स्वार्थसिद्धि मात्र है और यह कोई बुरी बात नहीं है यह तो मनुष्य का स्वाभाविक लक्षण है। इस तरह का छल तो वह दिन रात करता रहता है। घर में दो-चार रुपये पड़े रहने पर भी वह महाजन के सामने निःसंकोच कसम खा जाता है कि उसके पास एक पैसे भी नहीं है और यहाँ तो केवल स्वार्थ ही नहीं बल्कि मनोरंजन भी है। बूढ़ों का बुढ़भस हास्यास्पद वस्तु है और ऐसे बूढ़ों से अगर कुछ ऐंठ लिया जाय तो उसमें कोई पाप या दोष नहीं लगता।

होरी एक गरीब किसान है। वह सर से पाँव तक कर्ज में डूबा हुआ है फिरभी गाय लेने की लालसा से वह भोला का पुनर्विवाह कराने का लालच देता है। गाय को 80 रुपये में लेना होरी को मँहगा नहीं लगा पर उधार को तो वह एक तरह से मुफ्त समझता है। वह जानता है कि भोला से गाय लेने के बाद उससे उसके पैसे

का भुगतान नहीं हो पाएगा फिरभी अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए उसे भोला के साथ इस तरह का छल करना अनुचित नहीं लगता है। वह सोचता है कि भारतीय किसान तो कर्ज में जन्म लेते हैं, कर्ज में जीवन यापन करते हैं और कर्ज में ही मर जाते हैं। होरी और भोला दोनों की स्वार्थ लिप्सा यहाँ स्पष्ट है। कर्ज में डूबा रहनेवाले व्यक्ति अगर छल का सहारा नहीं लेगा तो उसे अपना जीवन बिताना अपने परिवार का पालन पोषण करना और अपने जीवन की विविध समस्याओं का समाधान करना असंभव हो जाएगा।